देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
Sept. 2025
Vol.-22, Issue-3(2)

Impact Factor
8.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

21वीं सदी का साहित्य : नव विमर्श

Special Issue Editor :
Dr. Poornima S.

Special Issue Co-Editor :
Dr. Anuradha P
Ms. V. Amudha

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 22 ISSUE-3(2) (सितम्बर 2025) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :
चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादिका :
डॉ. पूर्णिमा एस.,
डॉ. अनुराधा पी.,
मिस वी. अमुधा

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट
एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल

प्रकाशक :
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

53.	मिट्टी से बना अन्न	डॉ. टी. अरूणा कुमारी	285–289
54.	हसीनाबाद उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. अर्चना शर्मा	290–293
55.	भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने में कानूनी अधिकारों की भूमिका	विवेचना पाण्डेय, डॉ. सरिता भवानी मालवीय	294–300
56.	**Therigatha : Legacy and Relevance in 21st Century Indian Literature**	**Indresh Prasad Purohit**	**301-310**
57.	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताओं में यथार्थ विमर्श	डॉ. लता एस. पाटिल	311-315
58.	**Entrepreneurial Self-Efficacy and Entrepreneurial Intentions of Tribal Women: A case Study of Chhattisgarh, India.**	**Dimpal Agrawal**	**316-328**
59.	**The Anatomy of Indifference : Literature as an Antidote to Modern Insensitivity**	**Dr. S. Farhana Zabeen, Dr. I. Jane Austen**	**329-334**
60.	**Quest for Self-Identity and Independence of Women in Preeti Shenoy's The Secret Wishlist**	**Dr. R. Abeetha, Dr.A. Jayashree Prabhakar**	**335-345**
61.	**Feminine Isolation and Resistance through Nature in Anita Desai's *Fire on the Mountain***	**Ms.Greeshma N.P, Dr. I. Jane Austen**	**346-351**
62.	बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता के अनुप्रयोग की संभावनाएं और चुनौतियां	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, श्री एच पंढरीनाथ	352–355
63.	मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के सृजनात्मक विचारों का अध्ययन	वी. अमुधा, डॉ. अनुराधा पाकलापाटि	356–360
64.	डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा–साहित्य में बदलते सामाजिक सरोकार	जे. अशोक कुमार जैन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	361–365
65.	मंजरी : किन्नर विमर्श	डी श्रीदेवी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	366–369
66.	सामाजिक माध्यम और इंटरनेट पर रचनात्मकता : नए माध्यम एवं नई भाषा (बाल साहित्य के संदर्भ में)	गुरू गोविंद विश्वत, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	370–375
67.	वृद्धों के प्रति संवेदनहीन होती मनुष्यता	बी. कमला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	376–381
68.	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कथा साहित्य में बदलता हुआ सामाजिक यथार्थ	डॉ. अनुराधा पी.	382–386
69.	कृष्नचंदर कृत 'जामुन का पेड़' कहानी में प्रशासनिक विमर्श	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	387–392

70.	21वीं सदी के नारी विमर्श–रेत समाधि	पूर्णिमा. जे, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	393–397
71.	'बुद्धिमानों की मूर्खता' : सुरेंद्र शर्मा के व्यंग्य निबंधों में राजनीतिक विमर्श	प्रिया. एस, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	398–403
72.	21वीं सदी में तमिलनाडु स्थित बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी गृहपत्रिकाओं का प्रकाशन : एक नव विमर्श	श्री एम. संजीवी कनी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	404–411
73.	पर्यावरण विमर्श : साहित्य में पारिस्थितिकी और प्रकृति चिंतन (बाल कहानियों के संदर्भ में)	वेंकट शिल्पा काकि, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	412–416
74.	21वीं सदी के आधुनिक हिन्दी उपन्यास बेहया में केंद्रित नारी	अमरजीत	417–422
75.	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श और कथा साहित्य में स्त्री दृष्टि	Mrs. S. Subha	423-425
76.	भूमिका द्विवेदी कृत 'किराये के मकान' उपन्यास में चित्रित महानगरीय जीवन की समस्याएँ	आर. डी. निर्मला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	426–430
77.	पर्यावरण विमर्श और 21वीं सदी के उपन्यास	संगीता कुमारी	431–435
78.	समकालीन साहित्य में किसान विमर्श	इ. जाक्कुलिन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	435–442
79.	इक्कीसवीं शताब्दी में उपन्यास–साहित्य के समक्ष चुनौतियाँ	डॉ. के आनंदी	443–446

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Sept. 2025 Page No. : 387-392

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

कृष्नचंदर कृत 'जामुन का पेड़' कहानी में प्रशासनिक विमर्श

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन

सहा. प्राध्यापक–विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, विआइएसटीएएस, चेन्नै।

बीज–शब्द :

कृष्नचंदर, प्रशासनिक विमर्श, लालफीताशाही, जवाबदेही, सुशासन, नौकरशाही, संवेदनहीनता, नैतिकता, कार्यकुशलता, विभागीय समन्वय, मानवीयता, औपचारिकता, सुधार।

शोध का सार :

किसी भी राष्ट्र के सुचारु संचालन के लिए लोक प्रशासन का मूल उद्देश्य नागरिकों के अधिकारों और जीवन की रक्षा करना तथा जनकल्याण सुनिश्चित करना है। हालाँकि, कृष्नचंदर की कालजयी कथा 'जामुन का पेड़' सरकारी तंत्र की कार्यप्रणाली में व्याप्त विकृतियों को उजागर करती है। कहानी के माध्यम से लेखक यह संदेश देते हैं कि जब शासन का उद्देश्य जनसेवा की बजाय नियम पालन बन जाए, तो प्रशासन अपनी आत्मा खो देता है। यह आलेख कहानी के प्रशासनिक विमर्श पर केंद्रित है। इस आलेख का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि कैसे नियमों का कठोर पालन और प्रक्रियाओं की जटिलता एक व्यक्ति के जीवन से भी बड़ी हो जाती है।

परिचय :

कृष्नचंदर (1914–1977) हिंदी और उर्दू साहित्य के प्रसिद्ध कथाकार थे। उन्होंने मुख्यतः उर्दू में लिखा, लेकिन भारत की स्वतंत्रता के बाद हिंदी में भी लेखन शुरू किया। कृष्नचंदर ने अपनी रचनाओं में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक विसंगतियों पर तीखा व्यंग्यात्मक प्रहार किया। उनकी कहानियाँ अक्सर मुहावरेदार, सजीव होती थीं, जिनमें व्यंग्य, विनोद और विचारों का समावेश होता था। उन्हें साहित्य एवं शिक्षा क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन 1961 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

कहानी का सार : उनकी कालजयी हास्य–व्यंग्य कथा 'जामुन का पेड़' भारतीय नौकरशाही की जड़ता, लालफीताशाही, और मानवीय संवेदनहीनता का प्रतीक है। कहानी में उन्होंने समाज में व्याप्त प्रशासनिक, राजनीतिक और मानवीय विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य किया।

सचिवालय के लॉन में गिरा जामुन का पेड़ एक कवि के ऊपर गिर जाता है। उसे बचाने के बजाय सरकारी विभाग फाइलों और आदेशों की उलझनों में फँस जाते हैं। हर विभाग जिम्मेदारी टालता है और नियमों का हवाला देता है। तीन दिन बाद जब अनुमति मिलती है, तब तक कवि मर चुका होता है।

प्रस्तावना :

'प्रशासनिक विमर्श' का अर्थ है शासन की संरचना, उसकी नीतियों, मूल्यों, और नागरिकों के साथ उसके व्यवहार की समीक्षा व विश्लेषण। यह आलेख इस बात पर केंद्रित होता है कि प्रशासनिक तंत्र समाज में सेवा, समानता, और नैतिकता कैसे सुनिश्चित करता है।

'सुशासन' का अर्थ है – ऐसा शासन जो पारदर्शी, जवाबदेह, त्वरित, नैतिक और जनहितकारी हो।

प्रतिक्रियाशीलता, जवाबदेही, नैतिकता एवं लोकाचार, साम्यता, कार्यकुशलता इसके मुख्य सिद्धांत हैं। उक्त सुशासन के सिद्धांतों से विचलित समाज कैसे होगा? प्रस्तुत कहानी में कहानीकार इसे अत्यंत मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त करता है।

1. प्रतिक्रियाशीलता का अभाव :

'प्रतिक्रियाशीलता' का तात्पर्य है – नागरिकों की आवश्यकताओं, समस्याओं या संकटों पर त्वरित, प्रभावी और मानवीय प्रतिक्रिया देना। एक प्रतिक्रियाशील प्रशासन नागरिकों के प्रति संवेदनशील होता है। वह समस्या का समाधान समय रहते करता है, न कि कागजी औपचारिकताओं में उलझता है। प्रतिक्रियाशीलता, प्रशासनिक कार्यकुशलता और विश्वसनीयता की कसौटी है। यदि शासन संकट की घड़ी में तुरंत प्रतिक्रिया नहीं दे सकता, तो जनता का विश्वास कम हो जाता है। सुशासन तभी संभव है जब अधिकारी परिस्थिति के अनुसार तत्काल निर्णय लेने की क्षमता रखें। यह कहानी लगभग 50 वर्ष पुरानी होने के बावजूद, यह अत्यंत खेद का विषय है कि आज भी सरकारी तंत्र की प्रणाली में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है।

'जामुन का पेड़' कहानी में प्रतिक्रियाशीलता का पूर्ण अभाव दिखाई देता है। एक कवि जामुन के पेड़ के नीचे दबा हुआ है, पर अधिकारी 'ऊपर की अनुमति' की प्रतीक्षा में समय नष्ट करते रहते हैं। यथा :

"सुपरिंटेंडेंट अंडर–सेक्रेटरी के पास गया, अंडर–सेक्रेटरी डिप्टी सेक्रेटरी के पास गया... फाइल चलती रही, इसी में आधा दिन बीत गया।"

तीन दिन तक केवल फाइलें चलती रहीं, पर कोई वास्तविक कार्रवाई नहीं हुई। यह विलंब प्रशासन के नियम–पालन में सक्रिय है, पर मानवीय संकट में निष्क्रिय दर्शाता है। अंततः प्रतिक्रियाशीलता के अभाव से कवि की जान चली जाती है। यह प्रशासनिक कार्यकुशलता की असफलता का प्रतीक है।

2. 'उत्तरदायित्व' का अभाव :

'उत्तरदायित्व' अथवा 'जवाबदेही' का अर्थ है प्रत्येक अधिकारी या विभाग अपने कार्यों, निर्णयों और परिणामों के लिए उत्तरदायी हो। यह सिद्धांत शासन में पारदर्शिता और विश्वास का आधार है। प्रशासन के सन्दर्भ में 'उत्तरदायित्व' का अर्थ है कि कोई भी पदाधिकारी अपने कर्तव्यों से पलायन न करे। जहाँ जवाबदेही नहीं होती, वहाँ भ्रष्टाचार, लापरवाही और अनुत्तरदायित्व बढ़ता है। उत्तरदायी अधिकारी ही सुशासन की रीढ़ की हड्डी हैं। जवाबदेही तय करने से ही प्रशासन जनोन्मुख बनता है।

उक्त कहानी में कोई भी अधिकारी जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है। हर विभाग फाइल को दूसरे पर डाल देता है। प्रणाली में कोई यह नहीं कहता, "मैं इस व्यक्ति को बचाऊँगा।" सभी नियमों और अधिकार क्षेत्र का बहाना बनाकर जिम्मेदारी से बचते हैं। आखिरकार उत्तरदायित्व के अभाव ने एक सरल मानवीय कार्य को 'अंतर–विभागीय विवाद' में बदल दिया। यथा – "हम वाणिज्य विभाग के हैं, पेड़ कृषि विभाग के अधीन है।"

"कृषि विभाग कहता है– यह हॉर्टिकल्चर विभाग का मामला है।"

इस तरह फाइल एक विभाग से दूसरे विभाग तक घूमती रहती है। किसी को कवि अर्थात आम आदमी के जीवन की चिंता नहीं होती। यह स्थिति भारत के वास्तविक प्रशासनिक ढांचे में भी दिखाई देती है – जहाँ "फाइलें चलती हैं, पर कार्य नहीं होता।"

3. नैतिकता एवं लोकाचार का अभाव :

'नैतिकता' का आशय है – प्रशासनिक कार्यों में ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और न्यायपूर्ण व्यवहार।

'लोकाचार' का अर्थ है – जनता की सेवा करने की भावना, नागरिकों के प्रति दया, सहानुभूति और संवेदना रखना। शासन केवल नियमों पर नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों पर भी टिका होता है। एक नैतिक और सेवा–भावी अधिकारी नागरिकों के हित को सर्वोपरि रखता है। जहां नैतिकता और लोकाचार का अभाव होता है, वहां शासन अमानवीय बन जाता है।

कहानी में अधिकारी संवेदनशील या नैतिक नहीं हैं। वे एक जीवित व्यक्ति की तुलना में पेड़ और नियमों की चिंता अधिक करते हैं – "बेचारा जामुन का पेड़, कितना फलदार था।"

"क्या हम इनकी मित्रता की खातिर एक आदमी के जीवन का बलिदान नहीं कर सकते।"

एक अन्य सन्दर्भ में उक्त संवादों से यह स्पष्ट होता है कि प्रशासनिक तंत्र में न तो नैतिक जिम्मेदारी बची है, न सेवा–भाव। यथा : साहित्य अकादमी का सचिव तो जीवित कवि से कहता है :–

"अगर तुम मर जाओ, तो तुम्हारी बीवी को वजीफा मिल जाएगा।"

यह नैतिक पतन प्रशासन को अमानवीय बना देता है। यहाँ सेवा नहीं, केवल औपचारिकता बचती है।

4. साम्यता का अभाव :

'साम्यता' से यह तात्पर्य है – समाज के सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार करना, विशेषकर संकटग्रस्त और कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति रखना। यह न्याय और समान अवसर के सिद्धांत पर आधारित है। साम्यता शासन का नैतिक दायित्व है। यह सुनिश्चित करती है कि कोई भी व्यक्ति उपेक्षित न हो। जहाँ समानता और सहानुभूति होती है, वहीं सच्चा सुशासन संभव है।

प्रस्तुत कहानी में दबे हुए व्यक्ति की स्थिति समाज के उपेक्षित वर्गों का प्रतीक है। अधिकारियों ने उसकी पीड़ा की अनदेखी की। जब दबा हुआ व्यक्ति को देखने के लिए भीड़ लग जाती है, सभी यही सोचते हैं कि दबा आदमी मर चुका है। तब दीन स्वर में दबा हुआ व्यक्ति कहता है – "मैं अभी जिंदा हूँ, मुझे जिंदा रखो।"

यह विनती सत्ता–व्यवस्था की असंवेदनशीलता को उजागर करती है। अधिकारियों ने एक सामान्य नागरिक को "केस" या "फाइल" के रूप में देखा, न कि इंसान के रूप में। साम्यता के अभाव ने मानवीय मूल्य को औपचारिकता के नीचे दबा दिया।

5. कार्यकुशलता का अभाव :

'कार्यकुशलता' का अर्थ है – उपलब्ध संसाधनों और समय का सर्वोत्तम उपयोग कर परिणाम प्राप्त करना।

एक कार्यकुशल प्रशासन वह है जो शीघ्र, सटीक और प्रभावी ढंग से निर्णय ले। कार्यकुशलता शासन की सफलता का पैमाना है। अकुशलता से समय, धन और जन–जीवन तीनों का नुकसान होता है।

एक कार्यकुशल प्रणाली ही विकास और विश्वास दोनों सुनिश्चित करती है। कहानी में कार्यकुशलता का पूर्ण अभाव दिखाई देता है।

"फाइल तीन दिन तक विभागों में घूमती रही।"

यह अधिकारी कार्य करने से अधिक फाइल को सुरक्षित रखने में व्यस्त रहने की स्थिति को दर्शाती हैं।

अधिकारी निर्णय की बजाय नियमों की चर्चा करते रहते हैं। परिणामतः, कवि की मृत्यु हो जाती है और कार्य केवल कागजों पर "पूरा" होता है न कि वास्तविक जीवन में।

कार्यकुशलता के अभाव ने सुशासन को मजाक बना दिया – प्रशासन का उद्देश्य परिणाम नहीं, प्रक्रिया बन गया।

"सुनते हो, आज तुम्हारी फाइल मुकम्मल हो गई।"

संक्षेप में यह कह सकते हैं कहानी 'जामुन का पेड़' इन पाँचों सिद्धांतों की विफलता को उजागर करती है।

जहाँ प्रतिक्रियाशीलता नहीं है, जवाबदेही से बचा जा रहा है, नैतिकता और लोकाचार खो गए हैं, साम्यता का ह्रास हुआ है और कार्यकुशलता का अभाव है – वहाँ सुशासन संभव नहीं।

कृष्नचंदर ने व्यंग्य के माध्यम से चेतावनी दी है कि जब तक प्रशासन संवेदनशील और जनोन्मुख नहीं बनेगा, तब तक शासन केवल "फाइलों का प्रबंधन" रहेगा, "मानवता का संरक्षण" नहीं। कहानी में प्रशासनिक तंत्र का असंवेदनशील, औपचारिक और जिम्मेदारी–रहित चेहरा उजागर होता है। कवि की जान बचाने के बजाय फाइलों की औपचारिकता निभाई जाती है – यही प्रशासनिक विमर्श का केंद्र बिंदु है। 'जामुन का पेड़' कहानी इस विमर्श को साहित्यिक रूप में प्रस्तुत करती है।

6. नौकरशाही की कठोरता और लालफीताशाही :

'नौकरशाही', शासन की वह प्रणाली है जिसमें प्रशासनिक निर्णय पदानुक्रम और नियमों के अनुसार लिए जाते हैं। 'लालफीताशाही' का अर्थ है – अत्यधिक औपचारिकता और नियमों के पालन में विलंब, जिससे कार्यकुशलता प्रभावित होती है। कहानी में सुपरिंटेंडेंट तत्काल निर्णय लेने से बचता है और कहता है :–

"ठहरो, मैं अंडर–सेक्रेटरी से पूछ लूँ।"

यह वाक्य पदानुक्रम की कठोरता और लालफीताशाही को दर्शाता है। अतः एक दबे हुए व्यक्ति की जान बचाने जैसा सरल कार्य भी ठहर जाता है। कवि की मृत्यु यह दिखाती है कि नौकरशाही में नियम मानवता से ऊपर हो गए हैं।

7. मानवीय संवेदनहीनता और मूर्खतापूर्ण सुझाव :

'संवेदनहीनता' का अर्थ है – दूसरों के दुःख या कष्ट के प्रति उदासीन रहना। प्रशासनिक दृष्टि से यह तब होता है जब अधिकारी नियमों को मानवीय करुणा से ऊपर रखते हैं। कहानी में यह असंवेदनशीलता चरम पर पहुँच जाती है।

"अगर पेड़ काटा नहीं जा सकता, तो आदमी ही को काटकर निकाल लिया जाए।"

"बेचारा जामुन का पेड़, कितना फलदार था!"

ये संवाद दिखाते हैं कि सरकारी कर्मचारी पेड़ और नियमों के प्रति अधिक संवेदनशील हैं, जबकि एक

जीवित व्यक्ति उनके लिए केवल 'मामला' बन जाता है। यह स्थिति मानवीय मूल्य प्रणाली के क्षरण का प्रतीक है।

8. आम आदमी की भूमिका :

'आम आदमी की भूमिका' का तात्पर्य नागरिकों की सामाजिक–जवाबदेही से है – वे व्यवस्था के प्रति कितने सक्रिय और सजग हैं। कहानी में आम कर्मचारी वर्ग संवेदनहीन तमाशबीन बन गया है।

"बेचारा जामुन का पेड़... इसकी जामुनें कितनी रसीली थीं!"

जब माली पेड़ हटाने की बात करता है, तो वे सहमत होते हैं, पर जैसे ही अधिकारी रोकता है, सब शांत हो जाते हैं। यह बताता है कि नागरिक स्वयं भी व्यवस्था की जड़ता का हिस्सा बन चुके हैं। यह अत्यंत सोचनीय है।

9. प्रशासनिक सुधार की दिशा में समाधान :

'प्रशासनिक सुधार' का आशय है – शासन–प्रणाली में ऐसी संरचनात्मक व नीतिगत परिवर्तन जो इसे उत्तरदायी, संवेदनशील और प्रभावी बनाएँ। कृष्नचंदर की प्रस्तुत कहानी में केवल आलोचना नहीं, बल्कि सुधार का संकेत भी देखने को मिलता है। सशक्त और प्रगतिशील समाज अथवा देश के लिए सुशासन प्रणाली नितांत आवश्यक है। वर्तमान भारत में सुशासन प्रणाली के लिए निम्न सुधार आवश्यक हैं :

1. **निर्णय प्रक्रिया का विकेंद्रीकरण :** निचले अधिकारियों को निर्णय का अधिकार मिले।
2. **उत्तरदायित्व :** प्रत्येक स्तर पर जवाबदेही तय की जाए।
3. **नैतिकता एवं लोकाचार :** अधिकारी मानवीय मूल्य अपनाएँ। प्रशासनिक तंत्र में ईमानदारी, सहानुभूति और सेवा भाव का समावेश किया जाए।
4. **विभागीय समन्वय :** सभी मंत्रालयों और विभागों के बीच संवाद की प्रणाली बने और सहयोग को मजबूत।
5. **प्रतिक्रियाशीलता :** मानवीय मामलों में शीघ्र निर्णय और कार्रवाई को प्राथमिकता दी जाए। इससे सम्बंधित त्वरित निर्णय के लिए प्रक्रियाएँ सरल हों।

निष्कर्ष :

जामुन का पेड़' भारतीय नौकरशाही की असंवेदनशीलता और औपचारिकता की कहानी है।

तीन दिन तक फाइल घूमती रही और जब प्रधानमंत्री ने अनुमति दी, तब तक कवि मर चुका था।

"सुनते हो, आज तुम्हारी फाइल मुकम्मल हो गई।"

यह वाक्य भारतीय शासन की वास्तविकता को उजागर करता है – जहाँ कागज पर कार्य पूरे हो जाते हैं, लेकिन वास्तविक जीवन की त्रासदियाँ अनदेखी रह जाती हैं।

कहानी हमें यह सिखाती है कि प्रशासन केवल नियमों का पालन नहीं, बल्कि मानवता की रक्षा का माध्यम है। जब तक शासन में नैतिकता, उत्तरदायित्व और संवेदनशीलता का समावेश नहीं होगा, तब तक सुशासन एक स्वप्न ही रहेगा। जब शासन औपचारिकता में उलझ जाता है, तो मानवता समाप्त हो जाती है।

कहानी का संदेश यह है –"प्रशासन का सर्वोच्च धर्म नियम नहीं, मानवता है।" जब तक शासन संवेदनशील, जवाबदेह और मानवीय नहीं होगा, तब तक सुशासन केवल एक कल्पना बना रहेगा।

सन्दर्भ :

1. https://jeejeejojo.com/%E0%A4%9C%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%A8-%E0%A4%95%E0%A4%BE-%E0%A4%AA%E0%A5%87%E0%A4%A1%E0%A4%BC-jamun-ka-ped-%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%B7%E0%A5%8D%E0%A4%A3-%E0%A4%9A%E0%A4%82%E0%A4%A6/
2. https://www.rekhta.org/stories/jaamun-ka-ped-krishn-chander-stories?lang=hi
3. https://hindi.thebetterindia.com/hindi-literature/jamun-ka-ped-hindi-story-by-krishna-chander/
4. https://archive.org/details/jamunkaped
5. https://www.femina.in/hindi/sahitya/kahani/krishna-chandars-story-jamun-ka-ped-3736.html
6. https://www.evidyarthi.in/wp-content/uploads/2022/06/chhattisgarh-board-class-9- hindi-chapter-3.3.pdf